भूमिका

इंडियन पीपल्स थिएटर एशोसिएशन 'इप्टा' कला के उस विचारधारा के तहत नहीं हुआ जिसमें कला सिर्फ कला के लिए मानी जाती है बल्कि उस विचारधारा के तहत हुआ जिसमें कला का महत्व जीवन के लिए माना जाता है। कला के माध्यम से खासकर रंगमंच के द्वारा सामाजिक परिवर्तन के लिए आंदोलन में विश्वास रखने वाली इस संस्था की स्थापना 1943 में मुंबई में हुई। जल्दी ही देश के अन्य प्रमुख शहरों में इसकी शाखाएं खोली गई ताकि देशभर में कार्य हो सके। इसी क्रम में बिहार की राजधानी पटना में भी इप्टा की स्थापना हुई।

ऐसा माना जाता है कि अपनी विचारधारा के कारण स्वभाविक ही इप्टा ने वैसी प्रस्तुतियों पर अपने को केंद्रित रखा जिसमें युगीन यथार्थ दिखता है। सामान्य दृष्टि से देखने पर यह लगता है कि इप्टा आजतक अपनी विचारधारा से विचलित नहीं हुई है। लेकिन जन आंदोलन का महत्वपूर्ण शस्त्र नुक्कड़ नाटक जब सरकारी योजनाओं का प्रचारक बन गया है तो ऐसे यह विचारनीय हो उठता है कि इप्टा भी अपनी विचारधारा से विचलित हुई है क्या? इस प्रश्न का उत्तर मिलना तभी संभव था जब हम इप्टा के नाटकों में युगीन यथार्थ का अध्ययन करें। अतः मैंने इस विषय को शोध के लिए चुनने का निर्णय किया। लेकिन एम.फिल. पाठ्यक्रम की समय सीमा और वित्त की उपलब्धता के मद्देनजर विषय को पटना इप्टा तक सीमित किया गया और पटना इप्टा की प्रस्तुतियों में 2001ई. सेलेकर 2017ई. तक की प्रस्तुतियों पर विचार किया गया क्योंकि हमें समकालीन प्रस्तुतियों में युगीनयथार्थ पर विचार करना था।

इस शोध में गुणात्मक, विवरणात्मक शोध प्रविधि के अंतर्गत साहित्यपुनरावलोकन, अवलोकन, साक्षात्कार विधि से प्राप्त प्राथमिक और द्वितीयक आंकड़ो को अंतर्वस्तुविश्लेषण विधि के द्वारा विश्लेषित करके परिणाम प्राप्त किया गया है और वह परिणाम इस प्रबंध के रूप में प्रस्तुत है। प्रस्तुत प्रबंध को 6 अध्यायों में विभक्त किया गया है।

भूमिका

प्रथम अध्याय में इप्टा के इतिहास की जानकारी है, दूसरे अध्याय में बिहार में इप्टा नाम दिया गया है यानी यह अध्याय बिहार में इप्टा के इतिहास पर केंद्रित है, तीसरे अध्याय में पटना इप्टा के इतिहास का वर्णन है। यह 3 अध्याय वस्तुतः इप्टा के इतिहास से संबंधित हैं लेकिन क्रमानुसार इतिहास को गहराई से देखने का प्रयास किया गया है। चौथे अध्याय में शोध की सीमा में पटना इप्टा की नाट्य प्रस्तुतियों का परिचय है, पाँचवे अध्याय में पटना इप्टा की शोध की सीमा में हुए नौ नाटकों में दिखे युगीन यथार्थ का वर्णन और विश्लेषण किया गया है, छठे और अंतिम अध्याय में वर्तमान में पटना इप्टा का विश्लेषण वैचारिक, सांस्कृतिक एवं रचनात्मक चुनोतियों के परीप्रेक्ष्य में किया गया है। इन अध्यायों के अतिरिक्त प्रस्तुत शोध प्रबंध में तीन खंड क्रमशः उपसंघार, संदर्भ और परिशिष्ट भी संकलित है। उपसंघार में उपरोक्त 6 अध्यायों में वर्णित बातों को सार के रूप में लिखा गया है। संदर्भ में शोध में सहायक सामग्री के स्रोतों की जानकारी बिंदुवार मानक रूप में लिखा गया है। परिशिष्ट में वैसी सामग्रियां संकलित हैं जिनका उपयोग शोधकार्य में हुआ है लेकिन उसे सीधे-सीधे अध्यायों में संयोजित करना संभव नहीं था जबकि शोध की मौलिकता की सत्यापन हेतु इसकी जानकारी आवश्यक थी.

यह शोधकार्य मेरे लिए बहुत श्रमसाध्य रहा लेकिन विषय की रोचकता और ज्ञान क्षेत्र में वृद्धि में सहयोग की आकांक्षा ने मेरा धैर्य और उत्साह बनाए रखा. मैं आशा करता हूं कि हमारा यह शोध कार्य नाट्य क्षेत्र के अध्यताओं के अतिरिक्त अन्य पाठकों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा।

... शोधकर्ता